॥ श्रीहरिः ॥ 224

श्रीबिल्वमङ्गलाचार्यविरचितं

श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्रम्

(हिन्दी-अनुवादसहित)

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीबिल्वमङ्गलाचार्यविरचितं

श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्रम्

(१)

अग्रे कुरूणामथ पाण्डवानां
दुःशासनेनाहृतवस्त्रकेशा ।
कृष्णा तदाक्रोशदनन्यनाथा
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

[जिस समय] कौरव और पाण्डवोंके सामने भरी सभामें दुःशासनने द्रौपदीके वस्त्र और बालोंको पकड़कर खींचा, उस समय जिसका कोई दूसरा नाथ नहीं है ऐसी द्रौपदीने रोकर पुकारा—'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!'

(२)

श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे
भक्तानुकम्पिन् भगवन् मुरारे।
त्रायस्व मां केशव लोकनाथ
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

'हे श्रीकृष्ण! हे विष्णो! हे मधुकैटभको मारनेवाले! हे भक्तोंके ऊपर अनुकम्पा करनेवाले! हे भगवन्! हे मुरारे! हे केशव! हे लोकेश्वर! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।'

(३)

विक्रेतुकामाखिलगोपकन्या
मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद्
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जिनकी चित्तवृत्ति मुरारिके चरण-कमलोंमें लगी हुई है, वे सभी गोपकन्याएँ दूध-दही बेचनेकी इच्छासे घरसे चलीं। उनका मन तो मुरारिके पास था; अतः प्रेमवश सुध-बुध भूल जानेके कारण 'दही लो दही' इसके स्थानमें जोर-जोरसे 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' आदि पुकारने लगीं।

(४)

उलूखले सम्भृततण्डुलांश्च
संघट्टयन्त्यो मुसलैः प्रमुग्धाः।
गायन्ति गोप्यो जनितानुरागा
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

ओखलीमें धान भरे हुए हैं, उन्हें मुग्धा गोप-रमणियाँ मूसलोंसे कूट रही हैं और कूटते-कूटते कृष्णप्रेममें विभोर होकर 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस प्रकार गायन करती जाती हैं।

(५)

काचित्कराम्भोजपुटे निषण्णं
क्रीडाशुकं किंशुकरक्ततुण्डम्।
अध्यापयामास सरोरुहाक्षी
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

कोई कमलनयनी बाला मनोविनोदके लिये पाले हुए अपने कर-कमलपर बैठे किंशुककुसुमके समान रक्तवर्ण चोंचवाले सुग्गेको पढ़ा रही थी—पढ़ो तो तोता! 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'

(६)

गृहे गृहे गोपवधूसमूहः
प्रतिक्षणं पिञ्जरसारिकाणाम्।
स्खलद्गिरं वाचयितुं प्रवृत्तो
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

प्रत्येक घरमें समूह-की-समूह गोपांगनाएँ पींजरोंमें पाली हुई अपनी मैनाओंसे उनकी लड़खड़ाती हुई वाणीको क्षण-क्षणमें 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इत्यादि रूपसे कहलानेमें लगी रहती थीं।

(७)

पर्य्यङ्किकाभाजमलं कुमारं
प्रस्वापयन्त्योऽखिलगोपकन्याः।
जगुः प्रबन्धं स्वरतालबन्धं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

पालनेमें पौढ़े हुए अपने नन्हे बच्चेको सुलाती हुई सभी गोपकन्याएँ ताल-स्वरके साथ 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस पदको ही गाती जाती थीं।

(८)

रामानुजं वीक्षणकेलिलोलं
गोपी गृहीत्वा नवनीतगोलम्।
आबालकं बालकमाजुहाव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हाथमें माखनका गोला लेकर मैया यशोदाने आँखमिचौनीकी क्रीडामें व्यस्त बलरामके छोटे भाई कृष्णको बालकोंके बीचमेंसे पकड़कर पुकारा—'अरे गोविन्द! अरे दामोदर! अरे माधव!'

(१)

विचित्रवर्णाभरणाभिरामे-
ऽभिधेहि वक्त्राम्बुजराजहंसि।
सदा मदीये रसनेऽग्ररङ्गे
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

विचित्र वर्णमय आभरणोंसे अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होनेवाली हे मुखकमलकी राजहंसीरूपिणी मेरी रसने! तू सर्वप्रथम 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस ध्वनिका ही विस्तार कर।

(१०)

अङ्काधिरूढं शिशुगोपगूढं
स्तनं धयन्तं कमलैककान्तम्।
सम्बोधयामास मुदा यशोदा
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

अपनी गोदमें बैठकर दूध पीते हुए बालगोपालरूपधारी भगवान् लक्ष्मीकान्तको लक्ष्य करके प्रेमानन्दमें मग्न हुई यशोदा मैया इस प्रकार बुलाया करती थीं—'ऐ मेरे गोविन्द! ऐ मेरे दामोदर! ऐ मेरे माधव! जरा बोलो तो सही!'

(११)

क्रीडन्तमन्तर्व्रजमात्मजं स्वं
समं वयस्यैः पशुपालबालैः।
प्रेम्णा यशोदा प्रजुहाव कृष्णं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

अपने समवयस्क गोपबालकोंके साथ गोष्ठमें खेलते हुए अपने प्यारे पुत्र कृष्णको यशोदा मैयाने अत्यन्त स्नेहके साथ पुकारा—'अरे ओ गोविन्द! ओ दामोदर! अरे माधव!' [कहाँ चला गया?]

(१२)

यशोदया गाढमुलूखलेन
गोकण्ठपाशेन निबध्यमानः।
रुरोद मन्दं नवनीतभोजी
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

अधिक चपलता करनेके कारण यशोदा मैयाने गौ बाँधनेकी रस्सीसे खूब कसकर ओखलीमें उन घनश्यामको बाँध दिया, तब तो वे माखनभोगी कृष्ण धीरे-धीरे [आँखें मलते हुए] सिसक-सिसककर 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' कहते हुए रोने लगे।

(१३)

निजाङ्गणे कङ्कणकेलिलोलं
गोपी गृहीत्वा नवनीतगोलम्।
आमर्दयत्पाणितलेन नेत्रे
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

श्रीनन्दनन्दन अपने ही घरके आँगनमें अपने हाथके कंकणसे खेलनेमें लगे हुए हैं, उसी समय मैयाने धीरेसे जाकर उनके दोनों कमलनयनोंको अपनी हथेलीसे मूँद लिया तथा दूसरे हाथमें नवनीतका गोला लेकर प्रेमपूर्वक कहने लगीं—'गोविन्द! दामोदर! माधव!' [लो देखो, यह माखन खा लो।]

(१४)

गृहे गृहे गोपवधूकदम्बाः
सर्वे मिलित्वा समवाययोगे।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

व्रजके प्रत्येक घरमें गोपांगनाएँ एकत्र होनेका अवसर पानेपर झुंड-की-झुंड आपसमें मिलकर उन मनमोहन माधवके 'गोविन्द, दामोदर, माधव' इन पवित्र नामोंको पढ़ा करती हैं।

(१५)

मन्दारमूले वदनाभिरामं
बिम्बाधरे पूरितवेणुनादम्।
गोगोपगोपीजनमध्यसंस्थं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जिनका मुखारविन्द बड़ा ही मनोहर है; जो अपने बिम्बके समान अरुण अधरोंपर रखकर वंशीकी मधुर ध्वनि कर रहे हैं तथा जो कदम्बके तले गौ, गोप और गोपियोंके मध्यमें विराजमान हैं, उन भगवान्का 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इस प्रकार कहते हुए सदा स्मरण करना चाहिये।

(१६)

उत्थाय गोप्योऽपररात्रभागे
स्मृत्वा यशोदासुतबालकेलिम्।
गायन्ति प्रोच्चैर्दधि मन्थयन्त्यो
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

व्रजांगनाएँ ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर और उन यशुमतिनन्दनकी बाल-क्रीडाओंकी बातोंको याद करके दही मथते-मथते 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन पदोंको उच्च स्वरसे गाया करती हैं।

(१७)

जग्धोऽथ दत्तो नवनीतपिण्डो
गृहे यशोदा विचिकित्सयन्ती।
उवाच सत्यं वद हे मुरारे
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

[दधि मथकर माताने माखनका लौंदा रख दिया था। माखनभोगी कृष्णकी दृष्टि पड़ गयी, झट उसे धीरेसे उठा लाये।] कुछ खाया, कुछ बाँट दिया। जब ढूँढ़ते-ढूँढ़ते न मिला तो यशोदा मैयाने आपपर संदेह करते हुए पूछा—'हे मुरारे! हे दामोदर! हे माधव!' ठीक-ठीक बता, माखनका लौंदा क्या हुआ?

(१८)

अभ्यर्च्य गेहं युवतिः प्रवृद्ध-
प्रेमप्रवाहा दधि निर्ममन्थ।
गायन्ति गोप्योऽथ सखीसमेता
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जिसके हृदयमें प्रेमकी बाढ़ आ रही है, ऐसी माता यशोदा घरको लीपकर दही मथने लगी। तब और सब गोपांगनाएँ तथा सखियाँ मिलकर 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इस पदका गान करने लगीं।

(१९)

क्वचित् प्रभाते दधिपूर्णपात्रे
निक्षिप्य मन्थं युवती मुकुन्दम्।
आलोक्य गानं विविधं करोति
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

किसी दिन प्रातःकाल ज्यों ही माता यशोदा दहीभरे भाण्डमें मथानीको छोड़कर उठी त्यों ही उसकी दृष्टि शय्यापर बैठे हुए मनमोहन मुकुन्दपर पड़ी। सरकारको देखते ही वह प्रेमसे पगली हो गयी और 'मेरा गोविन्द! मेरा दामोदर! मेरा माधव!' ऐसा कहकर तरह-तरहसे गाने लगी।

(२०)

क्रीडापरं भोजनमज्जनार्थं
हितैषिणी स्त्री तनुजं यशोदा।
आजूहवत् प्रेमपरिप्लुताक्षी
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

क्रीडाविहारी मुरारि बालकोंके साथ खेल रहे हैं [अभीतक न स्नान किया है, न भोजन]; अतः प्रेममें विह्वल हुई माता उन्हें स्नान और भोजनके लिये पुकारने लगी—'अरे गोविन्द! ओ दामोदर! ओ माधव!' [आ बेटा! आ! पानी ठंडा हो रहा है, जल्दसे *नहा ले और कुछ खा ले।*]

(२१)

सुखं शयानं निलये च विष्णुं
देवर्षिमुख्या मुनयः प्रपन्नाः।
तेनाच्युते तन्मयतां व्रजन्ति
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

नारद आदि ऋषि 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इस प्रकार प्रार्थना करते हुए घरमें सुखपूर्वक सोये हुए उन पुराणपुरुष बालकृष्णकी शरणमें आये; अतः उन्होंने श्रीअच्युतमें तन्मयता प्राप्त कर ली।

(२२)

विहाय निद्रामरुणोदये च
विधाय कृत्यानि च विप्रमुख्याः।
वेदावसाने प्रपठन्ति नित्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

वेदज्ञ ब्राह्मण प्रातःकाल उठकर और अपने नित्य-नैमित्तिक कर्मोंको पूर्णकर वेदपाठके अन्तमें नित्य ही 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन मंजुल नामोंका कीर्तन करते हैं।

(२३)

वृन्दावने गोपगणाश्च गोप्यो
विलोक्य गोविन्दवियोगखिन्नाम्।
राधां जगुः साश्रुविलोचनाभ्यां
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

वृन्दावनमें श्रीवृषभानुकुमारीको वनवारीके वियोगसे विह्वल देख गोपगण और गोपियाँ अपने कमलनयनोंसे नीर बहाती हुई 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' आदि कहकर पुकारने लगीं।

(२४)

प्रभातसंचारगता नु गाव-
स्तद्रक्षणार्थं तनयं यशोदा।
प्राबोधयत् पाणितलेन मन्दं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

प्रात:काल होनेपर जब गौएँ वनमें चरने चली गयीं, तब उनकी रक्षाके लिये यशोदा मैया शय्यापर शयन करते हुए बालकृष्णको मीठी-मीठी थपकियोंसे जगाती हुई बोलीं—'बेटा गोविन्द! लल्लू दामोदर! मुन्ना माधव!' [उठ, जा गौओंको चरा ला।]

(२५)

प्रवालशोभा इव दीर्घकेशा
वाताम्बुपर्णाशनपूतदेहाः ।
मूले तरूणां मुनयः पठन्ति
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

केवल वायु, जल और पत्तोंके खानेसे जिनके शरीर पवित्र हो गये हैं, ऐसे प्रवालके समान शोभायमान लम्बी-लम्बी एवं कुछ अरुण रंगकी जटाओंवाले मुनिगण पवित्र वृक्षोंकी छायामें विराजमान होकर निरन्तर 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामोंका पाठ करते हैं।

(२६)

एवं ब्रुवाणा विरहातुरा भृशं
व्रजस्त्रियः कृष्णविषक्तमानसाः।
विसृज्य लज्जां रुरुदुः स्म सुस्वरं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

श्रीवनमालीके विरहमें विह्वल हुई व्रजांगनाएँ उनके विषयमें विविध प्रकारकी बातें कहती हुई लोक-लज्जाको तिलांजलि दे बड़े आर्तस्वरसे 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' कहकर जोर-जोरसे रोने लगीं।

(२७)

गोपी कदाचिन्मणिपिञ्जरस्थं
शुकं वचो वाचयितुं प्रवृत्ता।
आनन्दकन्द व्रजचन्द्र कृष्ण
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

गोपी श्रीराधिकाजी किसी दिन मणियोंके पिंजड़ेमें पले हुए तोतेसे बार-बार 'आनन्दकन्द! व्रजचन्द्र! कृष्ण! गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामोंको बुलवाने लगीं।

(२८)

गोवत्सबालैः शिशुकाकपक्षं
बध्नन्तमम्भोजदलायताक्षम्।
उवाच माता चिबुकं गृहीत्वा
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

कमलनयन श्रीकृष्णचन्द्रको किसी गोपबालककी चोटी बछड़ेकी पूँछके बालोंसे बाँधते देख मैया प्यारसे उनकी ठोढ़ीको पकड़कर कहने लगी—'मेरा गोविन्द! मेरा दामोदर! मेरा माधव!'

(२९)

प्रभातकाले वरवल्लवौघा
गोरक्षणार्थं धृतवेत्रदण्डाः।
आकारयामासुरनन्तमाद्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

प्रातःकाल हुआ, ग्वालबालोंकी मित्रमण्डली हाथोंमें बेतकी छड़ी और लाठी ले गौओंको चरानेके लिये निकली। तब वे अपने प्यारे सखा अनन्त आदिपुरुष श्रीकृष्णको 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' कह-कहकर बुलाने लगे।

(३०)

जलाशये कालियमर्दनाय
यदा कदम्बादपतन्मुरारिः।
गोपाङ्गनाश्चुक्रुशुरेत्य गोपा
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जिस समय कालियनागका मर्दन करनेके लिये कन्हैया कदम्बके वृक्षसे कूदे, उस समय गोपांगनाएँ और गोपगण वहाँ आकर 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' कहकर बड़े जोरसे रोने लगे।

(३१)

अक्रूरमासाद्य यदा मुकुन्द-
श्चापोत्सवार्थं मथुरां प्रविष्टः।
तदा स पौरैर्जयतीत्यभाषि
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जिस समय श्रीकृष्णचन्द्रने कंसके धनुर्यज्ञोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये अक्रूरजीके साथ मथुरामें प्रवेश किया, उस समय पुरवासीजन 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! तुम्हारी जय हो, जय हो' ऐसा कहने लगे।

(३२)

कंसस्य दूतेन यदैव नीतौ
वृन्दावनान्ताद् वसुदेवसूनू।
रुरोद गोपी भवनस्य मध्ये
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जब कंसके दूत अक्रूरजी वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण और बलरामको वृन्दावनसे दूर ले गये, तब अपने घरमें बैठी हुई यशोदाजी 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' कह-कहकर रुदन करने लगीं।

(३३)

सरोवरे कालियनागबद्धं
शिशुं यशोदातनयं निशम्य।
चक्रुर्लुठन्त्यः पथि गोपबाला
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

यशोदानन्दन बालक श्रीकृष्णको कालियह्रदमें कालियनागसे जकड़ा हुआ सुनकर गोपबालाएँ रास्तेमें लोटती हुई 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' कहकर जोरोंसे रुदन करने लगीं।

(३४)

अक्रूरयाने यदुवंशनाथं
संगच्छमानं मथुरां निरीक्ष्य।
ऊचुर्वियोगात् किल गोपबाला
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

अक्रूरके रथपर चढ़कर मथुरा जाते हुए श्रीकृष्णको देख समस्त गोपबालाएँ वियोगके कारण अधीर होकर कहने लगीं—'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' [हमें छोड़कर तुम कहाँ जाते हो?]

(३५)

चक्रन्द गोपी नलिनीवनान्ते
कृष्णेन हीना कुसुमे शयाना।
प्रफुल्लनीलोत्पललोचनाभ्यां
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

श्रीराधिकाजी श्रीकृष्णके अलग हो जानेपर कमलवनमें कुसुम-शय्यापर सोकर अपने विकसित कमलसदृश लोचनोंसे आँसू बहाती हुई 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' कहकर क्रन्दन करने लगीं।

(३६)

मातापितृभ्यां परिवार्यमाणा
गेहं प्रविष्टा विललाप गोपी।
आगत्य मां पालय विश्वनाथ
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

माता-पिता आदिसे घिरी हुई श्रीराधिकाजी घरके भीतर प्रवेश कर विलाप करने लगीं—'हे विश्वनाथ! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे *माधव!'* तुम आकर मेरी रक्षा करो! रक्षा करो!!

(३७)

वृन्दावनस्थं हरिमाशु बुद्ध्वा
गोपी गता कापि वनं निशायाम्।
तत्राप्यदृष्ट्वातिभयादवोचद्
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

रात्रिका समय था, किसी गोपीको भ्रम हो गया कि वृन्दावनविहारी इस समय वनमें विराजमान हैं। बस, फिर क्या था, झट उसी ओर चल दी; किंतु जब उसने निर्जन वनमें वनमालीको न देखा तब डरसे काँपती हुई 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव!' कहने लगी।

सुखं शयाना निलये निजेऽपि
नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

[वनमें न भी जायँ] अपने घरमें ही सुखसे शय्यापर शयन करते हुए भी जो लोग 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इन विष्णुभगवान्‌के पवित्र नामोंको निरन्तर कहते रहते हैं, वे निश्चय ही भगवान्‌की तन्मयता प्राप्त कर लेते हैं।

(३९)

सा नीरजाक्षीमवलोक्य राधां
रुरोद गोविन्द वियोगखिन्नाम्।
सखी प्रफुल्लोत्पललोचनाभ्यां
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

कमललोचना राधाको श्रीगोविन्दकी विरहव्यथासे पीड़ित देख कोई सखी अपने प्रफुल्ल कमलसदृश नयनोंसे नीर बहाती हुई 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' कहकर रुदन करने लगी।

(४०)

जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं
सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे रसोंको चखनेवाली जिह्वे! तुझे मीठी चीज बहुत अधिक प्यारी लगती है, इसलिये मैं तेरे हितकी एक बहुत ही सुन्दर और सच्ची बात बताता हूँ। तू निरन्तर 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इन मधुर मंजुल नामोंकी आवृत्ति किया कर।

(४१)

आत्यन्तिकव्याधिहरं जनानां
चिकित्सकं वेदविदो वदन्ति।
संसारतापत्रयनाशबीजं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

वेदवेत्ता विद्वान् 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामोंको ही लोगोंकी बड़ी-से-बड़ी विकट व्याधिको विच्छेद करनेवाला वैद्य और संसारके आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक—तीनों तापोंके नाशका बढ़िया बीज बतलाते हैं।

(४२)

ताताज्ञया गच्छति रामचन्द्रे
सलक्ष्मणेऽरण्यचये ससीते।
चक्रन्द रामस्य निजा जनित्री
गोविन्द दामोदर माधवेति॥*

अपने पिता दशरथकी आज्ञासे भाई लक्ष्मण और जनकनन्दिनी सीताके साथ श्रीरामचन्द्रजी बीहड़ वनोंके लिये चलने लगे, तब उनकी माता श्रीकौसल्याजी 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! [हे राम! हे रघुनन्दन! हे राघव!]' ऐसा कहकर जोरोंसे विलाप करने लगीं।

* अत्र 'हे राम रघुनन्दन राघवेति' इति पाठान्तरम्।

(४३)

एकाकिनी दण्डककाननान्तात्
सा नीयमाना दशकन्धरेण।
सीता तदाक्रन्ददनन्यनाथा
गोविन्द दामोदर माधवेति॥*

जब राक्षसराज रावण पंचवटीमें जानकीजीको अकेली देख उन्हें हरकर ले जाने लगा, तब रामचन्द्रजीके सिवा जिनका दूसरा कोई स्वामी नहीं है ऐसी सीताजी 'हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव! [हे राम! हे रघुनन्दन! हे राघव!]' कहकर जोरोंसे रुदन करने लगीं।

---

* अत्र 'हे राम रघुनन्दन राघवेति' इति पाठान्तरम्।

(४४)

रामाद्वियुक्ता जनकात्मजा सा
विचिन्तयन्ती हृदि रामरूपम्।
रुरोद सीता रघुनाथ पाहि
गोविन्द दामोदर माधवेति॥*

रथमें बिठाकर ले जाते हुए रावणके साथ, रामवियोगिनी सीता हृदयमें अपने स्वामी श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करती हुई 'हा रघुनाथ! हा गोविन्द! हा दामोदर! हा माधव! [हे राम! हे रघुनन्दन! हे राघव!] मेरी रक्षा करो' इस प्रकार रोती हुई जाने लगीं।

* अत्र 'हे राम रघुनन्दन राघवेति' इति पाठान्तरम्।

(४५)

प्रसीद विष्णो रघुवंशनाथ
सुरासुराणां सुखदुःखहेतो।
रुरोद सीता तु समुद्रमध्ये
गोविन्द दामोदर माधवेति॥*

जब रावणके साथ सीताजी समुद्रके मध्यमें पहुँचीं, तब यह कहकर जोर-जोरसे रुदन करने लगीं—'हे विष्णो! रघुकुलपते! हे देवताओंको सुख और असुरोंको दुःख देनेवाले! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! [हे राम! हे रघुनन्दन! हे राघव!] प्रसन्न होइये, प्रसन्न होइये।'

* अत्र 'हे राम रघुनन्दन राघवेति' इति पाठान्तरम्।

(४६)

अन्तर्जले ग्राहगृहीतपादो
विसृष्टविक्लिष्टसमस्तबन्धुः ।
तदा गजेन्द्रो नितरां जगाद
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

पानी पीते समय जलके भीतरसे जब ग्राहने गजका पैर पकड़ लिया और उसका समस्त दुःखी बन्धुओंसे साथ छूट गया, तब वह गजराज अधीर होकर अनन्यभावसे निरन्तर 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' ऐसा कहने लगा।

(४७)

हंसध्वजः शङ्खयुतो ददर्श
पुत्रं कटाहे प्रपतन्तमेनम्।
पुण्यानि नामानि हरेर्जपन्तं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

अपने पुरोहित शंखमुनिके साथ राजा हंसध्वजने अपने पुत्र सुधन्वाको तप्त तैलकी कड़ाहीमें कूदते और 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इन भगवान्‌के परमपावन नामोंका जप करते हुए देखा।

(४८)

दुर्वाससो वाक्यमुपेत्य कृष्णा
सा चाब्रवीत् काननवासिनीशम्।
अन्तःप्रविष्टं मनसा जुहाव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

[एक दिन द्रौपदीके भोजन कर लेनेपर असमयमें दुर्वासा ऋषिने शिष्योंसहित आकर भोजन माँगा तब] वनवासिनी द्रौपदीने भोजन देना स्वीकार कर अपने अन्तःकरणमें स्थित श्रीश्यामसुन्दरको 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' कहकर बुलाया।

(४९)

ध्येयः सदा योगिभिरप्रमेय-
श्चिन्ताहरश्चिन्तितपारिजातः ।
कस्तूरिकाकल्पितनीलवर्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

योगी भी जिन्हें ठीक-ठीक नहीं जान पाते, जो सभी प्रकारकी चिन्ताओंको हरनेवाले और मनोवांछित वस्तुओंको देनेके लिये कल्पवृक्षके समान हैं तथा जिनके शरीरका वर्ण कस्तूरीके समान नीला है, उन्हें सदा ही 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामोंसे स्मरण करना चाहिये।

(५०)

संसारकूपे पतितोऽत्यगाधे
मोहान्धपूर्णे विषयाभितप्ते।
करावलम्बं मम देहि विष्णो
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

जो मोहरूपी अन्धकारसे व्याप्त और विषयोंकी ज्वालासे संतप्त है, ऐसे अथाह संसाररूपी कूपमें मैं पड़ा हुआ हूँ। 'हे मेरे मधुसूदन! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' मुझे अपने हाथका सहारा दीजिये।

(५१)

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे
समागते दण्डधरे कृतान्ते।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! मैं तुझीसे एक भिक्षा माँगता हूँ, तू ही मुझे दे। वह यह कि जब दण्डपाणि यमराज इस शरीरका अन्त करने आवें, तब बड़े ही प्रेमसे गद्गद स्वरमें 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इन मंजुल नामोंका उच्चारण करती रहना।

(५२)

भजस्व मन्त्रं भवबन्धमुक्त्यै
जिह्वे रसज्ञे सुलभं मनोज्ञम्।
द्वैपायनाद्यैर्मुनिभिः प्रजप्तं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! हे रसज्ञे! संसाररूपी बन्धनको काटनेके लिये तू सर्वदा 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!' इस नामरूपी मन्त्रका जप किया कर, जो सुलभ एवं सुन्दर है और जिसे व्यास, वसिष्ठादि ऋषियोंने भी जपा है।

(५३)

गोपाल वंशीधर रूपसिन्धो
लोकेश नारायण दीनबन्धो।
उच्चस्वरैस्त्वं वद सर्वदैव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

रे जिह्वे! तू निरन्तर 'गोपाल! वंशीधर! रूपसिन्धो! लोकेश! नारायण! दीनबन्धो! गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामोंका उच्च स्वरसे कीर्तन किया कर।

(५४)

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि
नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्तभक्तार्तिविनाशनानि
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू सदा ही श्रीकृष्णचन्द्रके 'गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन मनोहर मंजुल नामोंको, जो भक्तोंके समस्त संकटोंकी निवृत्ति करनेवाले हैं, भजती रह।

(५५)

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! 'गोविन्द! गोविन्द! हरे! मुरारे! गोविन्द! गोविन्द! मुकुन्द! कृष्ण! गोविन्द! गोविन्द! रथाङ्गपाणे! गोविन्द! दामोदर! माधव!' इन नामोंको तू सदा जपती रह।

(५६)

सुखावसाने त्विदमेव सारं
दुःखावसाने त्विदमेव गेयम्।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

सुखके अन्तमें यही सार है, दुःखकी निवृत्तिके लिये यही कीर्तन करनेयोग्य है और शरीरका अन्त होनेके समय भी यही मन्त्र जपनेयोग्य है, कौन-सा मन्त्र? यही कि 'हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!'

(५७)

दुर्वारवाक्यं परिगृह्य कृष्णा
मृगीव भीता तु कथं कथञ्चित्।
सभां प्रविष्टा मनसाजुहाव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

दुःशासनके दुर्निवार्य वचनोंको स्वीकारकर मृगीके समान भयभीत हुई द्रौपदी किसी-किसी तरह सभामें प्रवेशकर मन-ही-मन 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस प्रकार भगवान्‌का स्मरण करने लगी।

(५८)

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश
गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीकृष्ण! राधारमण! व्रजराज! गोपाल! गोवर्धन! विष्णो! गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह।

(५९)

श्रीनाथ विश्वेश्वर विश्वमूर्ते
श्रीदेवकीनन्दन दैत्यशत्रो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीनाथ! सर्वेश्वर! श्रीविष्णुस्वरूप! श्रीदेवकीनन्दन! असुरनिकन्दन! गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह।

(६०)

गोपीपते कंसरिपो मुकुन्द
लक्ष्मीपते केशव वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'गोपीपते! कंसरिपो! मुकुन्द! लक्ष्मीपते! केशव! वासुदेव! गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह।

(६१)

गोपीजनाह्लादकर व्रजेश
गोचारणारण्यकृतप्रवेश ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

जो व्रजराज व्रजांगनाओंको आनन्दित करनेवाले हैं, जिन्होंने गौओंको चरानेके लिये वनमें प्रवेश किया है; हे जिह्वे! तू उन्हीं मुरारिके 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह।

(६२)

प्राणेश विश्वम्भर कैटभारे
वैकुण्ठ नारायण चक्रपाणे।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'प्राणेश! विश्वम्भर! कैटभारे! वैकुण्ठ! नारायण! चक्रपाणे! गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह।

(६३)

हरे मुरारे मधुसूदनाद्य
श्रीराम सीतावर रावणारे।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

'हे हरे! हे मुरारे! हे मधुसूदन! हे पुराणपुरुषोत्तम! हे रावणारे! हे सीतापते श्रीराम! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!'—इन नामामृतका हे जिह्वे! तू निरन्तर पान करती रह।

(६४)

श्रीयादवेन्द्राद्रिधराम्बुजाक्ष
गोगोपगोपीसुखदानदक्ष ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीयदुकुलनाथ! गिरिधर! कमलनयन! गौ, गोप और गोपियोंको सुख देनेमें कुशल श्रीगोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका निरन्तर पान करती रह।

(६५)

धराभरोत्तारणगोपवेष
विहारलीलाकृतबन्धुशेष ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

जिन्होंने पृथ्वीका भार उतारनेके लिये सुन्दर ग्वालका रूप धारण किया है और आनन्दमयी लीला करनेके निमित्त ही शेषजीको अपना भाई बनाया है, ऐसे उन नटनागरके 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका हे जिह्वे! तू निरन्तर पान करती रह।

(६६)

बकीबकाघासुरधेनुकारे
केशीतृणावर्तविघातदक्ष ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

जो पूतना, बकासुर, अघासुर और धेनुकासुर आदि राक्षसोंके शत्रु हैं और केशी तथा तृणावर्तको पछाड़नेवाले हैं, हे जिह्वे! उन असुरारि मुरारिके 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका तू *निरन्तर पान* करती रह।

(६७)

श्रीजानकीजीवन रामचन्द्र
निशाचरारे भरताग्रजेश।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

'हे जानकीजीवन भगवान् राम! हे दैत्यदलन भरताग्रज! हे ईश! हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव!'—इस नामामृतका हे जिह्वे! तू निरन्तर पान करती रह।

(६८)

नारायणानन्त हरे नृसिंह
प्रह्लादबाधाहर हे कृपालो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

'हे प्रह्लादकी बाधा हरनेवाले दयामय नृसिंह! नारायण! अनन्त! हरे! गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका हे जिह्वे! तू निरन्तर पान करती रह।

(६९)

लीलामनुष्याकृतिरामरूप

प्रतापदासीकृतसर्वभूप ।

जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव

गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

हे जिह्वे! जिन्होंने लीलाहीसे मनुष्योंकी-सी आकृति बनाकर रामरूप प्रकट किया है और अपने प्रबल पराक्रमसे सभी भूपोंको दास बना लिया है, तू उन नीलाम्बुज-श्यामसुन्दर श्रीरामके 'गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका ही निरन्तर पान करती रह।

(७०)

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव
गोविन्द दामोदर माधवेति॥

हे जिह्वे! तू 'श्रीकृष्ण! गोविन्द! हरे! मुरारे! हे नाथ! नारायण! वासुदेव! तथा गोविन्द! दामोदर! माधव!'—इस नामामृतका ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान करती रह।

(७१)

वक्तुं समर्थोऽपि न वक्ति कश्चि-

दहो जनानां व्यसनाभिमुख्यम्।

जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव

गोविन्द दामोदर माधवेति॥

*इति श्रीबिल्वमङ्गलाचार्य*विरचितं श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।*

* उपनाम 'श्रीमधुमंगलाचार्य'।

अहो ! मनुष्योंकी विषय-लोलुपता कैसी आश्चर्यजनक है ! कोई-कोई तो बोलनेमें समर्थ होनेपर भी भगवन्नामका उच्चारण नहीं करते; किंतु हे जिह्वे ! मैं तुझसे कहता हूँ, तू 'गोविन्द ! दामोदर ! माधव !'—इस नामामृतका ही निरन्तर प्रेमपूर्वक पान करती रह।

इस प्रकार यह श्रीबिल्वमंगलाचार्यका बनाया हुआ गोविन्द-दामोदरस्तोत्र समाप्त हुआ।

मधुराष्टकम्

(१)

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है। उनके अधर मधुर हैं, मुख मधुर है, नेत्र मधुर हैं, हास्य मधुर है, हृदय मधुर है और गति भी अति मधुर है।

(२)

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

उनके वचन मधुर हैं, चरित्र मधुर हैं, वस्त्र मधुर हैं, अंगभंगी मधुर है, चाल मधुर है और भ्रमण भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

(३)

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

उनकी वेणु मधुर है, चरणरज मधुर है, करकमल मधुर हैं, चरण मधुर हैं, नृत्य मधुर है और सख्य भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

(४)

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

उनका गान मधुर है, पान मधुर है, भोजन मधुर है, शयन मधुर है, रूप मधुर है और तिलक भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

(५)

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

उनका कार्य मधुर है, तैरना मधुर है, हरण मधुर है, रमण मधुर है, उद्गार मधुर है और शान्ति भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

(६)

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

उनकी गुंजा मधुर है, माला मधुर है, यमुना मधुर है, उसकी तरंगें मधुर हैं, उसका जल मधुर है और कमल भी अति मधुर हैं; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

(७)

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गोपियाँ मधुर हैं, उनकी लीला मधुर है, उनका संयोग मधुर है, भोग मधुर है, निरीक्षण मधुर है और शिष्टाचार भी मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

(८)

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गोप मधुर हैं, गौएँ मधुर हैं, लकुटी मधुर है, रचना मधुर है, दलन मधुर है और उसका फल भी अति मधुर है; श्रीमधुराधिपतिका सभी कुछ मधुर है।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

श्रीकृष्णसौन्दर्यवैभवम्

मदशिखण्डिशिखण्डविभूषणं
मदनमन्थरमुग्धमुखाम्बुजम् ।
व्रजवधूनयनाञ्जनरञ्जितं
विजयतां मम वाङ्मयजीवितम् ॥

मेरी वाणीके प्राणस्वरूप एवं अपने मुग्ध मुखाम्बुजसे मन्मथको भी तिरस्कृत करनेवाले उन मोर-मुकुटसे विभूषित श्रीकृष्णकी सदा ही जय हो, जिनका श्याम शरीर व्रजवधूटियोंके नयनांजनसे रंजित है।

निखिलभुवनलक्ष्मीनित्यलीलास्पदाभ्यां
कमलविपिनवीथीगर्वसर्वंकषाभ्याम् ।
प्रणमदभयदानप्रौढि वाढादृताभ्यां
किमपि वहतु चेतः कृष्णपादाम्बुजाभ्याम् ॥

श्रीकृष्णके जो चरणारविन्द समस्त भुवनोंकी लक्ष्मीकी विलासभूमि हैं, जो कमलवन-समूहको अपने सौकुमार्य और सौन्दर्यसे पराभूत करनेवाले हैं और जिन्होंने शरणागतिको अभय दान देनेकी उत्कृष्टतामें आदरपूर्ण गौरव प्राप्त कर लिया है—ऐसे श्रीकृष्णके चरणाम्बुजोंसे जो एक अनिर्वचनीय माधुर्य सुखका स्रोत निःसृत होता है, वह मेरे चित्तमें निरन्तर प्रवाहित होता रहे।

मणिनूपुरवाचालं वन्दे तच्चरणं विभोः।
ललितानि यदीयानि लक्ष्माणि व्रजवीथिषु॥

मैं प्रभुके मणि-नूपुरोंसे मुखर उन चरण-कमलोंकी वन्दना करता हूँ, जिनकी ललित पद-पंक्तियाँ आज भी व्रजकी निकुंजोंमें (सुकुमार बालुकाके परागपूर्ण अंचलमें) अंकित हैं।

कारुण्यकर्बुरकटाक्षनिरीक्षणेन
तारुण्यसंवलितशैशववैभवेन ।
आपुष्णता भुवनमद्भुतविभ्रमेण
श्रीकृष्णचन्द्रशिशिरीकुरु लोचनं मे॥

हे कृष्ण! अपने तारुण्य-मिश्रित शैशवके वैभवसे, भुवन-पोषणकारी अपनी अद्‌भुत विलासधारासे और करुणा-ललित कटाक्षोंके निरीक्षणसे मेरे लोचनोंको शीतल कर दो।

कदा वा कालिन्दीकुवलयदलश्यामतरला:
कटाक्षा लक्ष्यन्ते किमपि करुणावीचिनिचिता:।
कदा वा कन्दर्पप्रतिभटजटाचन्द्रशिशिरा:
कमप्यन्तस्तोषं दधति मुरलीकेलिनिनदा:॥

अहा! वे अनिर्वचनीय करुणा-तरंगोंसे व्याप्त एवं श्रीकालिन्दीजीके कमल-कुल-सदृश श्यामल और चपल कटाक्ष मुझे कब अपना लक्ष्य

बनायेंगे? हाय! कन्दर्पका दर्प दलन करनेवाले श्रीशंकरकी जटा-घटाके सदृश शीतल— मुरलिकाके केलि निनाद मुझे एक अचिन्त्य— अनिर्वचनीय आत्मतोष कब प्रदान करेंगे?

त्वच्छैशवं त्रिभुवनाद्भुतमित्यवेहि
मच्चापलं च मम वा तव वाधिगम्यम्।
तत्किं करोमि विरलं मुरलीविलासि
मुग्धं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्याम्॥

आपका बालरूप तीनों लोकोंमें सर्वाधिक सुन्दर है, यह आप भलीभाँति समझ लीजिये और मेरा मन उस बालरूपके दर्शनके लिये

कितना अधीर है यह बात न तो आपसे ही छिपी है और न मुझसे ही। हे मुरली-विलासि! ऐसी स्थितिमें क्या उपाय करूँ, जिससे आपके अलौकिक मुग्ध मुखाम्बुजको मैं अपनी आँखोंसे देख सकूँ।

बालेन मुग्धचपलेन विलोकितेन

मन्मानसे किमपि चापलमुद्वहन्तम्।

लोलेन लोचनरसायनमीक्षणेन

लीलाकिशोरमुपगूहितुमुत्सुकाः स्मः॥

अपनी बालसुलभ चपल और मुग्ध चितवनोंसे हमारे हृदयमें जो एक विचित्र ललक उत्पन्न कर दिया करते हैं, ऐसे नेत्र-रसायन-

रूप लीलाकिशोरका आलिंगन करनेके लिये हमारी उतावली आँखें उत्कण्ठित हो रही हैं।

अधीरबिम्बाधरविभ्रमेण
हर्षार्द्रवेणुस्वरसम्पदा च।
अनेन केनापि मनोहरेण
हा हन्त हा हन्त मनो दुनोषि॥

हाय! हाय! वंशीकी इस विचित्र, मनोहर और हर्षस्निग्ध स्वर-सम्पदासे तथा चपल बिम्बफल-सदृश अधर-विलाससे मेरे मनको क्यों जलाये डाल रहे हो?

आलोललोचनविलोकितकेलिधारा-
नीराजिताग्रचरणैः करुणाम्बुराशेः।
आर्द्राणि वेणुनिनदैः प्रतिनादपूरै-
राकर्णयामि मणिनूपुरशिञ्जितानि॥

अहा! चपल नेत्रोंकी चितवनके क्रमसे अपने श्रीचरणोंके अग्रभागको थिरकाकर बजायी हुई वंशीकी प्रतिध्वनित स्वरलहरियोंसे स्निग्ध हुई कृपासिन्धु श्रीकृष्णके मणिमय नूपुरोंकी ध्वनि मेरे कानोंमें पड़ रही है।

हे देव हे दयित हे भुवनैकबन्धो
हे कृष्ण हे चपल हे करुणैकसिन्धो।

हे नाथ हे रमण हे नयनाभिराम
हा हा कदा नु भवितासि पदं दृशोर्मे॥

हे देव (लीलारसिक)! हे प्रियतम! हे त्रिभुवनके एकमात्र आत्मीय बन्धु! हे कृष्ण (मन-प्राणको आकर्षित करनेवाले!) हे चपल! (सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र!) हे करुणाके महासागर! हे प्राणाधार! हे आत्मामें रमण करनेवाले! हे नयनाभिराम! आह! पता नहीं, आप कब मेरी दृष्टिके पात्र बनेंगे?

लीलायताभ्यां रसशीतलाभ्यां
नीलारुणाभ्यां नयनाम्बुजाभ्याम्।

आलोकयेदद्भुतविभ्रमाभ्यां
काले कदा कारुणिकः किशोरः॥

वह करुणा-सागर किशोरमूर्ति (श्रीकृष्ण) अद्भुत विभ्रमोंसे युक्त, लीलासे विकसित और रससे शीतल अपने अरुण-श्याम नयनारविन्दोंसे मुझे किस समय देखेंगे?

बहलचिकुरभारं बद्धपिच्छावतंसं
चपलचपलनेत्रं चारुबिम्बाधरोष्ठम्।
मधुरमृदुलहासं मन्दरोदारलीलं
मृगयति नयनं मे मुग्धवेषं मुरारेः॥

जिसका सघन केशकलाप माथेपर बँधे हुए मोर-मुकुटसे अलंकृत है, जिसके नेत्र अतिशय चपल हैं, जिसका अधर-ओष्ठ बिम्बाफलके सदृश मनोहर है, जिसकी मुसकराहट मधुर और मृदुल है, मुरारिके उस मनोहर वेशको मेरी दृष्टि खोज रही है।

तत्कैशोरं तच्च वक्त्रारविन्दं
तत्कारुण्यं ते च लीलाकटाक्षाः।
तत्सौन्दर्यं सा च सान्द्रस्मितश्रीः
सत्यं सत्यं दुर्लभं दैवतेऽपि॥

वैसा किशोर वेश, वह मुखारविन्द, वैसी करुणा, वे लीला-ललित

कटाक्षावलियाँ, वह सौन्दर्य और वह सघनस्मितका वैभव—वास्तवमें ये गुण समस्त देवसमूहमें भी दुर्लभ हैं।

एतन्नाम विभूषणं बहुमतं वेषाय शेषैरलं
वक्त्रं द्वित्रिविशेषकान्तिलहरीविन्यासधन्याधरम्।
शिल्पैरल्पधियामगम्यविभवैः शृङ्गारभङ्गीमयं
चित्रं चित्रमहो विचित्रमहहो चित्रं विचित्रं महः॥

जब (श्रीकृष्णका) मुखारविन्द ही सौन्दर्य-सम्पादनमें विशेष अलंकार-स्वरूप है, तब अन्य अलंकार उसके लिये व्यर्थ ही हैं। उनके अधर दो-तीन (अरुण-श्वेत-श्याम-वर्णवाली) कान्ति-लहरियोंके

विन्याससे धन्य-धन्य हो रहे हैं। अल्प बुद्धिवाले साधारण देव जिसके वैभवको समझनेमें नितान्त असमर्थ हैं, शिल्पकी शृंगार-भंगिमाओंसे अलंकृत यह श्याम ज्योतिःप्रवाह चित्र-विचित्र परम विचित्र और चरम विचित्र है।

परिपालय नः कृपालयेत्यसकृज्जल्पितमार्त्तबान्धवः।
मुरलीमृदुलस्वनान्तरे विभुराकर्णयिता कदा नु नः॥

मैं बार-बार यह प्रलाप कर रहा हूँ कि हे कृपासागर! आप मुझे अपना लीजिये, किंतु अपनी मुरलीके उस मधुर स्वरमें निमग्न वह दीनबन्धु हमारी इस प्रार्थनाको न जाने कब सुनेगा?

मधुरमधुरबिम्बे मञ्जुलं मन्दहासे
शिशिरममृतनादे शीतलं दृष्टिपाते।
विपुलमरुणनेत्रे विश्रुतं वेणुवादे
मरकतमणिनीलं बालमालोकये नु॥

जिसके बिम्बफल-सदृश अधर बड़े मधुर हैं, मन्द मुसकान बड़ी मंजुल है, अमृततुल्य वार्तालाप बड़े शिशिर हैं, अरुण नयन बड़े विशाल हैं और वेणुवादन तो सर्वत्र विख्यात है ही—उस मरकत-मणि-तुल्य श्यामघन बालकृष्णको मैं कब देखूँगा?

आर्द्रावलोकितधुरा परिणद्धनेत्र-
माविष्कृतस्मितसुधामधुराधरोष्ठम् ।

आद्यं पुमांसमवतंसितबर्हिबर्ह-
मालोकयन्ति कृतिनः कृतपुण्यपुञ्जाः ॥

सुकुमार चितवनके गौरवसे संयुक्त नेत्रवाले, विकसित मुसकानरूपी अमृतसे मधुर अधरवाले, मोर-मुकुटसे अलंकृत—ऐसे पुरुषोत्तमके दर्शन तो उन्हींको प्राप्त होते हैं, जो सौभाग्यशाली हैं और जिन्होंने बहुत-बहुत पुण्य किये हैं। हमारे-जैसे भाग्यहीनोंको उनके दर्शन कहाँ?

बालोऽयमालोलविलोचनेन
वक्त्रेण चित्रीकृतदिङ्मुखेन।
वेषेण घोषोचितभूषणेन
मुग्धेन दुग्धे नयनोत्सवं नः ॥

यह सुकुमार किशोर अपने चंचल नेत्रोंसे, चतुर्दिक् कान्तिकी कमनीय रश्मियाँ विकीर्ण करनेवाले अपने मुखमयंकसे और अपने अतिशय सुन्दर घोषोचित वेष-विभूषणसे हमारे नेत्रोंके लिये आनन्दका संदोहन कर रहा है।

सोऽयं विलासमुरलीनिनदामृतेन
सिञ्चन्नुदञ्चितमिदं मम कर्णयुग्मम्।
आयाति मे नयनबन्धुरनन्यबन्धु-
रानन्दकन्दलितकेलिकटाक्षलक्ष्मी ॥

जिसने अपनी विलासभरी सरस बाँकी चितवनसे मेरे हृदयस्थ

आनन्दको अंकुरित कर दिया है—यह वही मेरे नयनोंका तारा, मेरा अनन्य बन्धु अपनी सुरीली मुरलीकी स्वर-सुधा-धारासे मेरे उत्सुक और पिपासित कानोंको सींचता हुआ इधर ही आ रहा है।

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित कुछ साधन-भजन-सम्बन्धी पुस्तकें

कोड	पुस्तक	कोड	पुस्तक
592	**नित्यकर्म-पूजाप्रकाश**	1367	**श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा**
1627	**रुद्राष्टाध्यायी**—सानुवाद	052	**स्तोत्ररत्नावली**—सानुवाद
1417	**शिवस्तोत्ररत्नाकर**	509	**सूक्ति-सुधाकर**
610	**व्रत-परिचय**	211	**आदित्यहृदयस्तोत्रम्**
1162	**एकादशी-व्रतका माहात्म्य**	224	**श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्रम्**
1136	**वैशाख-कार्तिक-माघमास-माहात्म्य**	231	**रामरक्षास्तोत्रम्**
		495	**दत्तात्रेय-वज्रकवच**—सानुवाद
1588	**माघमासका माहात्म्य**	054	**भजन-संग्रह**

कोड	पुस्तक	कोड	पुस्तक
140	**श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली**	222	**हरेरामभजन**—१४ माला
142	**चेतावनी-पद-संग्रह** (दोनों भाग)	225	**गजेन्द्रमोक्ष**—सानुवाद, हिन्दी पद्य, भाषानुवाद
144	**भजनामृत**—६७ भजनोंका संग्रह	139	**नित्यकर्म-प्रयोग**
1355	**सचित्र-स्तुति-संग्रह**	524	**ब्रह्मचर्य और संध्या-गायत्री**
1214	**मानस-स्तुति-संग्रह**	1471	**संध्या, संध्या-गायत्रीका महत्त्व और ब्रह्मचर्य**
1344	**सचित्र-आरती-संग्रह**	210	**संध्योपासनविधि एवं तर्पण-बलिवैश्वदेवविधि**—मन्त्रानुवादसहित
1591	**आरती-संग्रह**—मोटा टाइप	614	**संध्या**
807	**सचित्र आरतियाँ**		
208	**सीतारामभजन**		
221	**हरेरामभजन**—दो माला (गुटका)		